सौंदर्य की दृष्टी से राजस्थानी लघुचित्रों में नारी चित्रन और हावभाव

Ujjwal
S. Kadode
(Lecturer)
State Institute of Fine Arts,
Rohtak (H.R)

राजस्थानी परम्परा एवं संस्कृतियो को गौरन्वीत करने का श्रेय यहां कि पारम्पारिक चित्रकला को जाता है। राजस्थान में चित्रकला प्रति अभिरूची और उसका मौलिक स्वरूप परम्परागत रूप से प्रचलित था। कोटा जिले के 'आलनीय, दरा, बैराठ, आहाड़ तथा भरतपुर जिले के 'दर' नामक स्थानों के शैलाश्रयों में आदि मानव द्वारा उकेरे गये रेखाकंण में कलात्मकता। तत्कालीन आकृतियों के भाव दर्शाने का प्रारंभिक चित्रण को दर्शाया गया है।

गुजराती शैली, जैन शैली, अपभ्रंश शैली के रूप में विकसित होकर राजस्थानी शैली का विकास हुआ। 1451 में चित्रित 'बंसतविलास' 'महापुराण' 'मृगवति' विल्हन कि चौर पंचाशिखा' गीतगोविंद, रागमाला आदि में राजस्थानी चित्र शैली का भाव दर्शन होता है।

17 शताब्दी के शुरूवाती खण्ड मे राजस्थानी चित्रकला में अधिक बदलाव आये। राजकीय तड़क भड़क, हावभाव, अंलकरण और शासकों के ऐश्वर्य तथा विलासिता पूर्ण जीवन का चित्रण इसकी प्रधानता रही। राधाकृष्ण, कृष्णलीला आदि चित्रों में धार्मिकता के साथ कामुकता भी दृष्टिगोचर होती है। जो यहां कि शैली का श्रृगारिक भाग रहा है।

मेवाड़ के कलाकारों ने नैसर्गिता को एक आलंकारिक रूप में उसे प्रस्तुत किया है। चित्रों में पर्वत बताने के लिए आलकरण, आलेखन को प्रमुखता दी है। पृथ्वी का वैशिष्ट पूर्ण वातावरण निर्माण करने के लिए लाल, हरे एवं पीले रंगों का उपयोग किया है। वृक्षों के पत्ते, पुश्पीत पौधे या पेड़ के पत्तों के साथ पुश्पों के गुच्छे अंकित किये है। मानवीय आकृतिया लम्बी एवं हावभाव दर्शन के लिए चेहरा गोल, अण्डाकार चिबूक और गर्दन का भाग अधिक भारी बताया है। मुखपर बड़ी–बड़ी मुछे और विशाल नैत्र, खुले हुए, सिर पर मेवाड़ी पगड़ी आदि से चित्रों में विशेष अनुभूति मिलती है। स्त्रियों की सौन्दर्य एवं हावभाव में अधिक अलंकरण किये गये है। मीनाकृती आँखे भरी हुई चिबुक, अधर, कुछ खुले हुए मुख प्रभावोत्पादक कमणीय विविध हावभाव में अंकित है। सौन्दर्य बढ़ाने के लिए कपोलों पर झुलतें केश, लम्बी नासिका, नथ, आभूषणों आदि का चित्रण किया गया है। पुरूषों के मुकुट में और स्त्रियों कि आभूषण एवं वस्त्रों के किनारे के अंकन में और कही–कही दानवी आकृति के चेहरे की भयानकता को उभारने के लिये आँखों के डैयों को बताने का प्रयोग किया गया है। राधा कृष्ण, गोप गोपिया आदि विशेष वस्तु का आधार लेकर श्रृगांर, उत्सर्ग, श्रद्वा, समर्पण, प्रेम आदि भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न रंग, रेखाओं का तथा मुगल चित्रकला कि बाह्य उत्तेजना, लालित्य एवं कमानीयता का समावेश हुआ। इस तरह 'ठोलामारू', शिवपुराण, नाथचरित्र, दुर्गाचरित्र, पंचतंत्र, रागमाला और कामसूत्र आदि ग्रंथों पर विभिन्न प्रसंगों पर चित्र निर्माण हुए और सौन्दर्यपूर्ण एवं हावभाव से ओतप्रोत रहे। राज मानसिंह के काल में अंतपूर के अनेक चित्रों में स्त्रियों का सौन्दर्य, हावभाव से विशेषता प्राप्त होती है। स्नान करते, तैरते एवं झुलते हुए चित्रण का अकंन हुआ है। महाराजा तख्तसिंह (1843–1873) के समय कृष्ण चरित्र का निर्माण में नारी सौन्दर्य का उत्कृष्ट रूप तथा होली के चित्रों में स्त्रियों के साथ, श्रृगांरपूर्ण चित्रों में नायिकाओं के साथ स्वयं महाराजा तख्तसिंह को चित्रित किया गया है। शिवदास द्वारा बनाये गये चित्रों में स्त्रिया हुक्का पीते, आभूशण युक्त कमर में जमदाढ़ लगाये स्त्रियों का चित्रण हुआ है। यहां के सभी चित्रों पर किशनगढ़ शैली जैसे हावभाव, अंगभंगिमाये आदि विशयो का स्पष्टीकरण दिखाई पड़ता है। महाराजा मानसिंह एवं तख्तसिंह के काल में श्रृगांरपूर्ण और हावभाव चित्रण का बाहुबल्य रहा। इन चित्रों में महाराजा और महारानी को नायक और नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है। संगीत का आनंद लेते हुए, स्त्रियों के साथ फाग खेलते हुए, जलक्रीड़ा करते, महारानी के हाथों मध पान करते, चौपड़ खेलते, वर्षा भ्रमण करते, झुला झुलते हुए, बारामासा में महाराजा रानी की संयोगकालीक किड़ाऐं आदि का चित्रों में हावभाव तथा सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। जिस कारण चित्रों में विशेशता, सजीव एवं तत्कालीन सौन्दर्य की अनुभूति होती है।

मारवाड़ शैली में राधा कृष्ण गीत गोविंद, रसिकप्रिया, रागरागिनी, बारामासा पर भी विशेश रूप से चित्रण हुआ। विभिन्न ग्रंन्थ रचनाओं में स्त्री आकृतियां भावपूर्ण रूप में दर्शाये है। स्त्रियों के अंग–अंगप्रत्यग का गठिला पन विशेष रूप से एवं सौन्दर्य भाव को दर्शाने के लिए आभूषणों में मोतियों का बाहुल्य, टिका, बाली, बेसर, लुंग, नथ, माला, भुजबंध, रेवटा, आठ, पैरो मे जूर तथा पायल पहने आदि का चित्रण किया है। स्त्रियों के वस्त्रों में कहीं – कहीं

स्त्रियों के सिर पर टोपी पहने चित्रित किया गया है। हाथों में मेहदी, सिर पर बिन्दी, सिर के काले घने लम्बे बाल आदि का अकंन किया है।

मारवाड़ चित्रशैली सौन्दर्य, अंलकरण के साथ भाव को अधिक महत्व दिया है। यह शैली में प्रेम स्थानों के नायक नायिकाओं के भावभंगीमांये का अत्यंत सुन्दर चित्रण हुआ। बारामासा चित्रण तत्कालिन सास्कृतिक परिवेश में नायक नायिका के मनोभावों का सफल अकंन हुआ है। आदि भाव को चित्रण करने के लिए लाल, पीले, रंगों का प्रयोग किया गया जो स्थानीय तत्कालीन विशेषता थी।

बीकानेर शैली भी राजस्थानी लघुचित्र कला में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह शैली में रागमाला का एक पूर्ण सैट तैयार किया गया था। इसको हरमन गोएट्स ने 17 वीं शताब्दी में प्रकाशित किया था। यह शैली मे सौन्दर्य अलंकरण और भावभगीमांये प्रचुरता से दिखती है। महाराजा, राजकुमारियो का सौन्दर्य, राजपूत राजकुमार के व्यक्ति चित्रणों में हावभाव, दरबार के आखेट के दृश्य आदि का अकंन यर्थाथ रूप से दिखता है। रागरागिनी चित्रण, रसिक प्रिया, नायिका श्रृगांर, स्त्रियां, शालभांजीका, शिक्का आदि का चित्रण हुआ है। भादोमास के चित्रों में एक रानी शांत बैठी हुई बताई गई है। उपर बादल बताऐं गए है। जंगली जानवर हाथी, शैर का भी चित्रण किया है। 18 वीं शताब्दी के बाद इस शैली पर रसिक कालिन प्रभाव पड़ने पर लयब्धता, रेखाकंण, सुकुमार्य रंगयोजना में अधिक बदलाव आया इस समय नारी कमनीयता पर अधिक ध्यान दिया गया है। स्त्रियों की आकृतियों के चेहरे पर परिवर्तन आया जो कोमल, कमनीयता नाजुक, हावभाव दिखाई पड़ते है। चेहरा ज्यादा गोल, नाक, नयन तिखी दर्शायी गयी है। लम्बी नाक एवं गोल, नाक के बीच में सलवटे भी बनाई जाती थी। इससे चेहरा अधिक दिव्यमान तना हुआ दिखाई देता है आकृतियों कि रेखाएं कोमल एवं मुखमुद्राओं का अकंन में मुगल प्रभाव दिखाई पड़ता है। किशनगढ़ शैली भी राजस्थान लघुचित्रकला में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। जो मारवाड़ शैली से प्रेरित हुई थी।

कृष्ण भक्ति से प्रेरित रसिकता एवं मधुरताके प्रेमी भक्त कवि नागरीदास, बनीठनी के अनिंध्य रूप सौन्दर्य कि प्ररेणा से पल्लवित तथा संसार प्रसिद्धकिशनगढ शैली प्रसिद्धहै। बनीठनी अपने अद्वितिय रूप सौन्दर्य के एवं रूपचित्रण भावभंगिमा के कारण आर्दश बन गई है। स्वंय कवि, कलाप्रेमी होने के कारण सावंतसिंह कि प्रिया होने में अपनी आराध्य राधा देवी को प्राप्त कर लिया है यह भाव प्रमुखतासे प्रतित होते है। यही वजह से नायक नायिका एवं राधा कृष्ण के चित्रण में नायिका एवं राधा की भूमिका में बनीठनी का चित्रण किया गया है। श्याम–श्यामा, रतीभाव जो विभिन्न दृष्टि से किशनगढ़ शैली में अंकित किया है। प्रिया–प्रियतम का मधुर मिलन, राधा–माधव कि प्रेम प्रसंग तथा हावभाव आदि चित्रण वैशिश्टपूर्ण है। कृष्णभक्त कविओं कि भाव भक्ति रचना को अभिव्यक्त करने के लिए गीतगोविंद भगवतपुराण, रूक्मिणीहरण, दरबारी वैभव का चित्रण हुआ किशनगढ़ शैली रेखाएं गतिमान, कोमल, बारीक तथा भावपूर्ण है। हस्तमुद्राएं के भाव स्पष्टीकरण में रेखाओं का सौन्दर्य देखते ही बनता है। आकृतियों में नाजुक भाव दिखाई पड़ते है सबसे प्रमुख विशेशता नारी सौन्दर्य में लम्बा चेहरा, पतला चेहरा, ऊचां तथा पीछे कि और ढलवा, ललाट, लम्बी नुकिली नासिका, लज्जा से झुकी हुई लम्बी छरहरे बदंन वाली, हाथों पर अलंकृत मेहदी, पैरों में महावरण, लम्बी कैश आदि वैशिष्टों के कारण यह शैली कोमलता का भाव प्रर्दशित करती है। जो स्थानीय स्त्री सौन्दर्य का, हावभाव का प्रतीक बन गई है।

नागोर शैली भी अपनी समय कि उत्कृष्ट शैली रही है। यह शैली में सौन्दर्य भाव, सशक्त, प्रवाह मय रेखाएं संयोजन सफल भावाभिव्यक्ति, स्वाभाविकता के साथ परिपक्व प्रतीत होती है। कोटा शैली में रागरागिनियों का भी चित्रण किया जाता था। नायीका भेद का चित्रण यही शैली में हुआ चित्रों में नायक–नायिका बैठे है। कुछ नायिका रूठी हुई सी और नायक उसे मना रहे हैं। सेविका पंख हला रही है चित्रों में सफेद रंग, सुनहरे रंग का अधिक प्रयोग किया है। राजस्थानी कला शैली में बुन्दी शैली अपनी मौलिक एवं निजी विशेशताओं के कारण प्रसिद्व है। नायक–नायिका, बारामासा, रूतु चित्रण, भागवतपुराण आदि पर सौन्दर्य पूर्ण भावपूर्ण चित्रण किया है। चित्रों में नारगीं, हरे, रंग का अधिक प्रदानता दिखती है। पीला, लाल, सफेद, काला, नीला आदि रंग विशेष भाव सौन्दर्य निर्माण करते है। स्त्रियों में भावपूर्ण नेत्र, नुकिली नासिका, गोल मुख, मेहन्दी कि लालीमा युक्त उगलियां जिसे नारी सौन्दर्य को अधिक आकर्षक बनाती है। चित्रों में अंकित सुकोमल एवं चेहरों पर गोलाई लाने के लिए छाया प्रकाश का सुन्दर प्रयास किया है। चित्रों की रेखाएं कोमल गति पूर्ण एवं भाव प्रदान है।

भारतीय चित्रकला के इतिहास में अपना वैशिश्टपूर्ण एवं सौन्दर्य, भाव, अलंकरण युक्त से परिपूर्ण ओतप्रोत राजस्थानी शैली समकक्ष शैलियों से प्रभावित होने पर भी राजस्थानी चित्रकला में स्त्री सौन्दर्य एवं हावभाव को मौलिक स्थान दिया है। बारिकी रेखाकंण, कम से कम रेखाओं का प्रयोग, रेखाकंण कुशलतापूर्ण किन्तु सरल रेखाओं द्वारा विशया अनुरूप अभिव्यक्ति, हावभाव, भगीमांये आदि प्रभाव, सशक्त अलंकरण भावप्रधान होने के कारण आंतरिक अभिव्यक्ति प्रधान है। अन्तः प्रकृति का सजीव अंकन, माधुर्य से परिपूर्ण प्रेम, सहयोग आश्रयीभाव प्रत्येक चित्र में दृष्टि गोचर होता है। जो भाव नायक के मन में है उसके अनुरूप प्रकृति को अंकित किया है। कविताओं में जो उपमाओं को बताया है उसके आधार पर मानव आकृतियों को अंगो–उपागों का अकंन हुआ है नारी को विभिन्न रूप में चित्रित करके अधिक आकर्षक सौन्दर्य पूर्ण बनाने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ ग्रंथः

जयपुर की चित्रांकन परंम्परा– डॉ, रीता प्रताप
किशनगढ चित्र शैली–डॉ, अन्नपुर्णा शुक्ला
राजस्थान का सांस्कृतीक इतिहास– डॉ, गोपीनाथ शर्मा
अलवर की चित्रांकन परंम्परा– डॉ, जयसिंह नीरज एंवम बेला माथुर
राजस्थान की चित्रकला– डॉ, जयसिंह नीरज
मारवाड की चित्रांकन परंम्परा– डॉ, धर्मविर वशिश्ट
भारतीय कला सामीक्षा–डॉ, ऋतु जोहर